RNI No. : UPHIN/2017/74695

डाक पंजीकरण सं. :
एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी. - 558/2018-2020

स्टूडियो न्यूज

वर्ष : 2 अंक : 11 | लखनऊ, सोमवार, 6 मई 2019 से 5 जून 2019 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 10 रूपये

सम्पादक की कलम से ...

मेरे फोटोग्राफर साथियों,

साथियों स्टूडियो न्यूज़ के मई 2019 के अंक के साथ हम आपके समक्ष हैं।

इस अंक में हमने विभिन्न विषयों का समावेश किया है, जैसे पद्मश्री श्री अनूप शाह जी के बारे में तथा उनके द्वारा खींचे गए फोटोग्राफ्स, स्टूडियो लाइट के इस्तेमाल के बारे में, महान विभूतियों में इस बार वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफी के प्रसिद्ध फोटोग्राफर ईश्वर हनुमंथ राव जी के बारे में, फिल्मों में फोटोग्राफर का क्या रोल रहा एवं मोबाइल के फ्लैश के बारे में जानकारी दी है। इसके अलावा हमारे कैमरा रिव्यू तथा त्रैमासिक फोटोग्राफी प्रतियोगिता के रिजल्ट भी इस अंक में सम्मिलित किए गए हैं।

हर अंक में हम कोशिश करते हैं कि आपको कुछ नया देने की तथा आपसे उम्मीद करते हैं जो विषय आपको पसंद हो उसके बारे में हमें बताएं जिससे हम उन विषयों के बारे में आपको जानकारी दे सकें।

आज के समय में वेडिंग फोटोग्राफर साथियों के साथ मुख्य रूप से जो समस्याएं देखने को मिलती है वह है तकनीक के साथ अपना सामंजस्य बनाना। क्या कंपनी जो नयी तकनीक ला रही है उसका कितना इस्तेमाल वेडिंग फोटोग्राफर साथी कर पा रहे हैं और उस तकनीक को सिखाने के लिए कम्पनियों ने क्या पहल की है। जब तक कम्पनियाँ नयी तकनीक को सिखाने के लिए कोई पुख्ता योजना नहीं बनाएगी तब तक आने वाले समय में अपने नए उत्पाद को बेचना कंपनियों के लिए मुश्किल हो जायेगा क्योंकि जब तक फोटोग्राफर साथियो को तकनीक समझ में नहीं आएगी तो वो नया उत्पाद खरीदने के बाद भी उसका सही रूप से इस्तेमाल नहीं कर पायेगा। जब उसको पुराने तरीके से ही अपना कार्य करना है तो वो इस रेस में क्यों पड़े, इसलिए ये जरूरी हो जाता है कि जो नए-नए उत्पाद आ रहे हैं उनके साथ उनको सिखाने की भी पूर्ण व्यवस्था की जाए। तकनीक को एक दिन में नहीं सीखा जा सकता है, ये निरंतर सीखने की प्रक्रिया है। इसमें दिन प्रतिदिन आपको नयी-नयी चीजे सीखने को मिलती हैं। ऐसा मानना है वेडिंग फोटोग्राफी तकनीक के साथ-साथ एक्सपीरियंस भी बहुत मायने रखती है क्योंकि वेडिंग फोटोग्राफी एक लाइव इवेंट होता है और लाइव इवेंट को कवर करना आपके अनुभव और क्षमता पर निर्भर करता है। कभी-कभी यह देखने को मिलता है कि तकनीकी रूप से बहुत मजबूत होने के बावजूद आप सही रूप से वेडिंग की फोटोग्राफ नहीं खींच पाते हैं। इसका कारण है कि लाइव इवेंट में रिटेक का कोई प्रावधान नहीं होता है। जो फोटो आपको दूसरों से अलग बनती है वो एक पल में आपके सामने से गुजर जाती है, इसलिए आपको मानसिक एवं तकनीकी रूप से सजग रहना अत्यंत आवश्यक है, यहाँ पर आपका अनुभव भी काम आता है। इसके साथ-साथ आपको उस कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी होना भी अति आवश्यक है।

जैसे-जैसे फोटोग्राफर साथियों की पहुँच बढ़ी है वैसे-वैसे फोटोग्राफर साथी अपने ज़िले या राज्य से बाहर भी वेडिंग बुक करते हैं इसके लिए उनको लोकल लेवल पर फोटोग्राफर साथियो की जरूरत पड़ती है। अभी तक ऐसा कोई पुख्ता इंतजाम नहीं है कि हम दूसरे ज़िले के या राज्य के फोटोग्राफर साथियों के बारे मे जानकारी पा सके। समय-समय पर ये मांग उठती रही है कि राज्य स्तर पर फोटोग्राफर साथियो की एक डायरेक्टरी का निर्माण किया जाए। ये तभी संभव है जब हम सब लोग अपने व्यापार को आगे बढ़ाने के लिए एकजुट हो तथा आपस में सामंजस्य बनाये। डायरेक्टरी से सम्बंधित आपके विचारों का स्वागत है।

सुरेंदर सिंह बिष्ट
सम्पादक

अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय खबरें

रोड ने दावा किया है कि उसका वायरलेस जीओ माइक्रोफोन दुनिया में सबसे छोटा है

रोड ने वायरलेस जीओ माइक्रोफोन सिस्टम का एलान किया है। यह बेहद ही छोटा ट्रांसमिटर व रिसीवर है जिससे ऑडियो में सहूलियत होती है।

लेक्सार ने तीन प्रकार की अल्ट्रा कंपैक्ट एसएसडी ड्राइव लॉन्च की

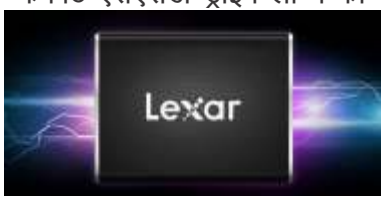

लेक्सार की 250 जीबी 500 जीबी और 1 टीबी की क्षमता वाली नई एसएसडी आती हैं और इतनी छोटी होती हैं कि सबसे छोटी पॉकेट में भी आ जाती हैं।

टिफिन ने ऑस्मो पॉकेट कैमरे के लिए लॉन्च किया एनडी/पीएल फिल्टर किट डीजेआइ

टिफिन लेकर आया है डीजेआइ ऑस्मो पॉकेट प्रयोग करने वाले वीडियोग्राफर्स के लिए फिल्टर किट का जोड़ा। कंपनी का कहना है कि यह डिवाइस से रिकॉर्ड होने वाले फुटेज को अधिक सिनेमैटिक लुक देने के लिए है। इस किट में है न्यूट्रल डेंसिटी फिल्टर जो कि ऑस्मो और पोलराइजर्स की शटर स्पीड करता है।

एफिडस एटीएल 200 कैमरा बैट्री पावर पर कैप्चर कर सकता है 80 दिन तक का टाइम लैप्स

ताइवान की एफिडस नाम कंपनी लेकर आई है छोटे आकार का कैमरे एटीएल-200 एनएबी 2019 पर। यह एक्शन कैमरे जैसा दिखता है। एटीएल-200 खासतौर पर बना है टाइम लैप्स कैप्चर करने के लिए। यह बैट्री पावर पर लगातार 30 दिनों तक कैप्चर कर सकता है।

सम्यंग का नया 85एमएम एएफ एफ-माउंट लेंस और इसके पहले दो जेड माउंट लेंस

सम्यंग ने अपने नए लेंस के बारे में बताया है। इसमें है 85एमएम एफ1.4 लेंस निकॉन एफ माउंट सिस्टम के लिए।

कैनन ईओएस आर फर्मवेयर अपडेट 1.2.0 लाया है आइ-डिटेक्शन एएफ सर्वो मोड में

18 अप्रैल को, कैनन ने निकाला ईओएस आर फुल फ्रेम मिररलेस कैमरा के लिए फर्मवेयर वर्जन 1.2.0, इसमें आई डिटेक्शन एएफ और छोटा एएफ फ्रेम साइज सपोर्ट है सर्वो के लिए स्टिल शूट के दौरान। कैनन के मुताबिक, कैमरा के मूवी सर्वो एएफ सेटिंग के बाजवूद दोनों एएफ ऑप्शन वीडियो शूटिंग के दौरान उपलब्ध हैं।

टोकिना ने अनाउंस किया नया 100 एमएम एफ 2.8 1:1 मैक्रो लेंस सोनी ई माउंट कैमरे के लिए

इस लेंस में है 1:1 अधिकतम मैग्निफिकेशन रेशियो। 30 सेमी (11.8 इंच) की न्यूनमत फोकस दूरी और 570 ग्राम वजन।

निकॉन का कूलपिक्स डब्लू 150 किड-फ्रेंडली वॉटरप्रूफ डिजिटल कैमरा

निकॉन का नया प्वाइंट एंड शूट किसी खिलौने की तरह दिखता है लेकिन फीचर्स में कम नहीं है ये। निकॉन ने कूलपिक्स डब्लू 150 की घोषणा कर दी है, यह एक रंगबिरंगा प्वाइंट एंड शूट डिजिटल कैमरा है जो कि वॉटरप्रूफ है 10 मीटर तक (33 फीट), -10 सेल्सियस तक कोल्डप्रूफ है। इस नए मॉडल में 13 मेगापिक्सल 1/3.1" सेंसर है और 3× ऑप्टिकल जूम एनआइकेकेओआर लेंस है (बराबर 30-90 एमएम), टारगेट फाइंडिंग एएफ, फुल एचडी वीडियो व स्टीरियो ऑडियो के साथ सपोर्ट करता मल्टीपल सीन मोड है।

टैमरॉन ने कैनन व निकॉन कैमरा के लिए 35-150 एमएम एफ 2.8-4 लेंस की घोषणा की

टैमरॉन ने कैनन ईएफ और निकॉन एफ माउंट के लिए 35-150एमएम एफ2.8-4डीआइ वीसी ओएसडी लेंस का एलान किया है। टैमरॉन का कहना है कि यह खास पोर्ट्रेट लेंस हैं। यह 14 ग्रुप में 19 एलिमेंट में बने हैं जिसमें लो डिस्पर्जन एलिमेंट (एलडी), तीन हाईब्रिड एस्फिरिकल एलिमेंट और टैमरॉन ब्रॉड-बैंड एंटी रिफ्लेक्शन बीबीएआर कोटिंग भी है।

फूजीफिल्म ने एक्स-टी3 के लिए रिलीज किया 3.0 फर्मवेयर, यह लाया है स्टिल व वीडियो दोनों के लिए बेहतर एएफ

फूजीफिल्म ने अपने एक्स-टी3 कैमरा सिस्टम के लिए रिलीज किया फर्मवेयर वर्जन 3.00, इससे फेस/आई डिटेक्शन बेहतर होगा, ऑटोफोकस का प्रदर्शन बेहतर होगा और कई बग भी सही होंगे।

2.10 का बेहतर वर्जन 3.00 में है बेहतर एएफ अल्गॉरिथम वीडियो व स्टिल दोनों के लिए जो कि दूर का भी चेहरा पहले से ज्यादा सटीक रूप से डिटेक्ट कर सकता है।

विश्व की प्रसिद्ध फोटोग्राफी कंपनी कैनन द्वारा स्विट्जरलैंड में आयोजित अवार्ड सेरेमनी में मेरठ स्थित अधिकृत डीलर **गोयल फोटो सर्विस** को एक्सिलेंस अवार्ड से नवाजा गया। यह अवार्ड कंपनी के वाईस प्रेसिडेंट श्री एडी उदागावा व नेशनल सेल्स मैनेजर श्री विशेष मागू द्वारा श्री नितिन गोयल को दिया गया। उन्होंने सेल्स में एक नया रिकार्ड काया किया है। देश विदेश से आये सभी अतिथियों के सामने कंपनी के अधिकारियों द्वारा गोयल फोटो सर्विस की काफी प्रशंसा की गई। फोटोग्राफी इंडस्ट्री की कई बड़ी हस्तियों ने गोयल फोटो सर्विस के निदेशक श्री राजीव लोचन गोयल व श्री नितिन गोयल को बधाई दी।

स्टूडियो न्यूज

वर्ष : 2 अंक : 11 | लखनऊ, सोमवार, 6 मई 2019 से 5 जून 2019 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 10 रूपये

पद्मश्री अनूप शाह - पेज 4

महान विभूतियाँ - पेज 7

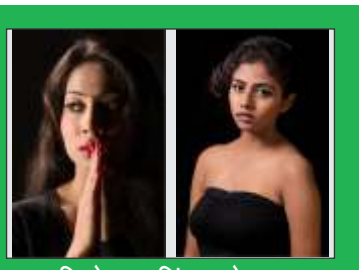

स्टूडियो लाइटिंग - पेज 8-9

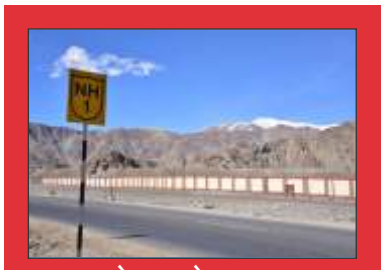

लेह - पेज 12

मोबाइल फ्लैश - पेज 13

DJI OSMO पॉकेट : ऑल इन वन कैमरा

ऑस्मो पॉकेट ऑल इन वन कैमरा है जिसमें है बिल्ट इन स्टैबलाइज़र जो कि, जैसा नाम कहता है, पॉकेट साइज है और यूज़ करने में बेहद आसान भी।

कैमरा डीजेआइ ड्रोन के जैसा है और 4के वीडियो व कई शूटिंग मोड में स्टिल इमेज ले सकता है। खास तौर पर व्लॉगर्स के लिए बनाया गया है ऑस्मो पॉकेट, प्रोडक्ट की स्पेसिफिकेशन इस बात को दर्शाती है।

तीन-एक्सिस गिंबल के अंदर यह कैमरा फुटेज को स्थिर रखेगा तब भी जब आप चल रहे हैं या बातचीत कर रहे हों।

वैसे कैमरे के अंदर की तकनीक और गिंबल बहुत रिवॉल्यूशनरी नहीं हैं, फिर भी द ऑस्मो पॉकेट बेहद यूनीक है क्योंकि इसमें दो प्रोडक्ट को एक में जोड़ा गया है, इससे एक सिंगल प्रोडक्ट बना है जो तुरंत क्वालिटी फुटेज बनाता है।

खासियत

- 25.7एमएम (equiv) F2 लेंस (80 डिग्री एफओवी)
- 1/2.3" सीएमओएस सेंसर
- 12एमपी रिज्यॉल्यूशन
- 4के अल्ट्रा एचडी वीडियोः 3840 × 2160 (24 / 25 / 30 / 48 / 50 / 60p),
- एफएचडीः 1920×1080 (24 / 25 / 30 / 48 / 50 / 60 / 120p)
- आइएसओ 100-3200
- बिल्ट इन गिंबल
- वजनः 116 g / 4 oz
- डायमेंशनः 121.9 × 36.9 × 28.6 mm
- माइक्रो एसडी स्लॉट 256 जीबी तक।
- LiPo 875 एमएएच 6.738 Wh बैट्री, 140 मिनट ऑपरेटिंग टाइम 1080p/30 एफपीएस वीडियो शूटिंग के दौरा
- 48 KHz एएसी ऑडियो आउटपुट

ऑपरेशन

ऑस्मो पॉकेट में केवल दो बटन हैं जिससे स्टैंड अलोन ऑपरेशन सीधा व सटीक हो जाता है। दाईं ओर ऑस्मो पॉकेट का बटन इसे ऑन कर देता है, टचस्क्रीन कंट्रोल से आप विभिन्न शूटिंग मोड को चुन सकते हैं (फोटो, वीडियो, स्लो मोशन, टाइमलैप्स, पैनो), रिकॉर्डिंग रिज्यॉल्यूशन (4के या 1080पी), फास्ट फॉलो जैसी सेटिंग, स्लो फॉलो, एफपीवी, या फिर कैमरा रीसेंटर करना, और फाइल रिव्यू करना।

बाईं ओर लाल डॉट के बटने से फुटेज रिकॉर्ड व फोटोज शूट किया जाता है।

स्मार्टफोन को ऑस्मो पॉकेट से छोटे अडैप्टर के माध्यम से कनेक्ट करने का और डीजेआइएम आइएमओ एस से शूट करने का ऑप्शन है।

एप से शूट करने पर आपको ऑस्मो पॉकेट के फीचर पर अधिक कंट्रोल मिलेगा। आप जो फिल्म कर रहे हैं उसका बड़ा व्यू मिलेगा, आप हिस्टोग्राम देख सकते हैं, यदि आपका फुटेज जरूरत से ज्यादा एक्सपोज हो रहा है तो आपको अलर्ट भी मिलेगा।

शुरू करने वालों के हिसाब से स्मार्टफोन अटैचमेंट काफी छोटा है-मेरे शुरूआती दौर में जब मैं ऑस्मो पॉकेट 1 से शूट कर रहा था तब मैंने इसकी एसेसरी और प्लास्टिक कवर खो दिया था। यह सुनिश्चित करने के लिए कि ऑस्मो पॉकेट और मेरे फोन के बीच कनेक्शन ठीक है मुझे अपना आईफोन एक्स प्रोटेक्टिव केस से हटाना पड़ता था, यह सेटअप मुझे ठीक नहीं लगा।

वैसे फोन को अटैच करके एप इस्तेमाल करना आपके शूटिंग करने के लिहाज से एक बेहतर आइडिया है। लेकिन एक बार फोन अटैच हो जाए तो यह सेटअप असंतुलित लगता है। मुझे शूट करने में, चलने में, कैमरा कंट्रोल करने के लिए फोन का टचस्क्रीन इस्तेमाल करने में दिक्कत आती थी। इस बात का भी मुझे ध्यान रखना होता था कि कहीं मैं अपना फोन गिरा न दूं।

एक अलग से ब्लूटूथ एसेसरी भी है जिसे आप ऑस्मो पॉकेट के निचले हिस्से में अटैच कर सकते हैं। इससे आप बिना ऑसमो पॉकेट को फोन से अटैच किए शूट कर रहे फुटेज को मॉनिटर कर सकते हैं, लेकिन मैंने इसे जांचा नहीं और इसलिए मैं इसके बारे में नहीं कह सकता। अच्छा होता कि ऑस्मो पॉकेट में बिल्ट इन वाई-फाई और ब्लूटूथ कनेक्टिविटी होती। बतौर मॉनिटर छोटी स्क्रीन में शूट किया और कैमरे पर भरोसा रखा कि वह अपना बेस्ट देगा, और इस तरह ऑस्मो पॉकेट को मैं अच्छी तरह से इस्तेमाल कर पाया।

वीडियो

ऑस्मो पॉकेट से आप स्टैबलाइज्ड 4के वीडियो फुटेज 30 या 60 एफपीएस से शूट कर सकते हैं। यह 120 एफपीएस पर स्लो मोशन 1080 पी भी शूट करने में सक्षम है। किसी भी डीजेआइए ड्रोन व बढ़िया स्मार्टफोन से मिलने वाली फुटेज की क्वालिटी के जैसा ही है यह।

कैमरे की आइएसओ रेंज 100-3200 है और एक लेंस जिसमें अपर्चर एफ2 है। उच्च नतीजों के लिए आप खिली धूप में इसे इस्तेमाल कर सकते हैं।

ऑस्मो पॉकेट की खासियत है इन कैमरा स्टैबलाइजेशन और इंटीग्रेटेड गिंबल।

ऑस्मो पॉकेट का कैमरा स्टैबलाइजेशन वाकई एक दमदार फीचर है। बड़े स्टैबलाइजर के मुकाबले इसे इस्तेमाल करना आसान है और विश्वसनीय भी। ऐसा इसलिए क्योंकि अंदरूनी स्टैबलाइजेशन तकनीक सर्वप्रथम कैमरे को ड्रोन से अटैच करने के लिए बनाई गई थी।

ऑस्मो पॉकेट के अंदरूनी प्रीएम्पलिफायर सर्वश्रेष्ठ नहीं हैं, लेकिन साउंड के मामले में कैमरा अच्छा है। आप गौर करेंगे कि वे क्लिप जो कि बहुत तेज आवाज वाले लाइव शो में ली गईं हैं उनकी ऑडियो क्वालिटी स्मार्टफोन में रिकॉर्ड किए जाने जैसी है।

स्टिल इमेज

यदि आप ऑस्मो पॉकेट से स्टिल शूट कर रहे हैं तो आप वैसी ही फाइल की उम्मीद कीजिए जैसी आपको स्मार्टफोन से मिलती है। फाइल 12 एमबी तक होंगी और रोशनी में कैमरा बहुत अच्छा प्रदर्शन करता है।

1/2.3" सीएमओएस सेंसर और एफ2 लेंस बहुत हद तक एक जैसे हैं जो कि सामान्य स्मार्टफोन में होते हैं और इमेज लगभग एक जैसी ही आती हैं।

दुर्भाग्य से, स्टिल शूट में ऑस्मो पॉकेट तेज चलने वाले सब्जेक्ट को कैप्चर करने में दिक्कत करता है। इसे इस्तेमाल करने में मैंने कई ब्लर देखे। इसमें आप फोटो और वीडियो को आसानी से टचस्क्रीन में बदल सकते हैं, जो कि हर बार अच्छा नहीं है। कई बार मुझसे गलती से वीडियो स्विच हो गया जबकि मुझे स्टिल शूट करना था।

निष्कर्ष

शूटर्स की प्रोफेशनल किट के लिए भले ही डीजेआइ ऑस्मो पॉकेट बेहद जरूरी गैजेट न हो, लेकिन इसका बेहतरीन क्वालिटी व स्टैबलाइज्ड वीडियो फुटेज कैप्चर करना आश्चर्यचकित कर देता है।

खास व्लॉगर्स के लिए बड़े शूट या पीओवी वीडियो स्टोरीज़ पर सप्लिमेंटरी बीटीएस फुटेज कैप्चर करने के लिए ऑस्मो पॉकेट एक बहुत अच्छा विकल्प है।

वह बच्चे जिनकी दिलचस्पी वीडियो प्रोडक्शन में है उनके लिए यह लिया जा

सकता है। इसको इस्तेमाल करना व सभी ऑपरेशन्स काफी सरल हैं। इसे समझने में बहुत वक्त नहीं लगता।

यह गैजेट इसलिए भी बढ़िया लगता है क्योंकि इसमें बिल्ट इन स्टैबलाइजेशन है। फुटेज की क्वालिटी किसी भी स्टैंडर्ड स्मार्टफोन के जैसी ही है, लेकिन ऑस्मो पॉकेट आपको वह देगा जो कोई भी स्मार्टफोन नहीं दे सकता- एकदम स्मूथ फुटेज।

हमें क्या पसंद हैः

- हल्का वजन और उपयोग करने में आसान स्टैंडअलोन डिवाइस
- 4के वीडियो की क्षमता
- इन-कैमरा स्टैबलाइजेशन
- ऑडियो की अच्छी गुणवत्ता
- टच स्क्रीन कंट्रोल

क्या और बेहतर हो सकता हैः

- जब स्मार्टफोन से अटैच कर शूटिंग करते हैं तब असंतुलन लगता है, इसके कारण मीमो एप का सीमित प्रयोग कर पाते हैं
- बिल्ट इन वाई-फाई व ब्लूटूथ नहीं है एप से कनेक्ट करने के लिए
- स्मार्टफोन अडैप्टर का रीमूवेबल कवर इतना छोटा कि यह आसानी से खो सकता है।

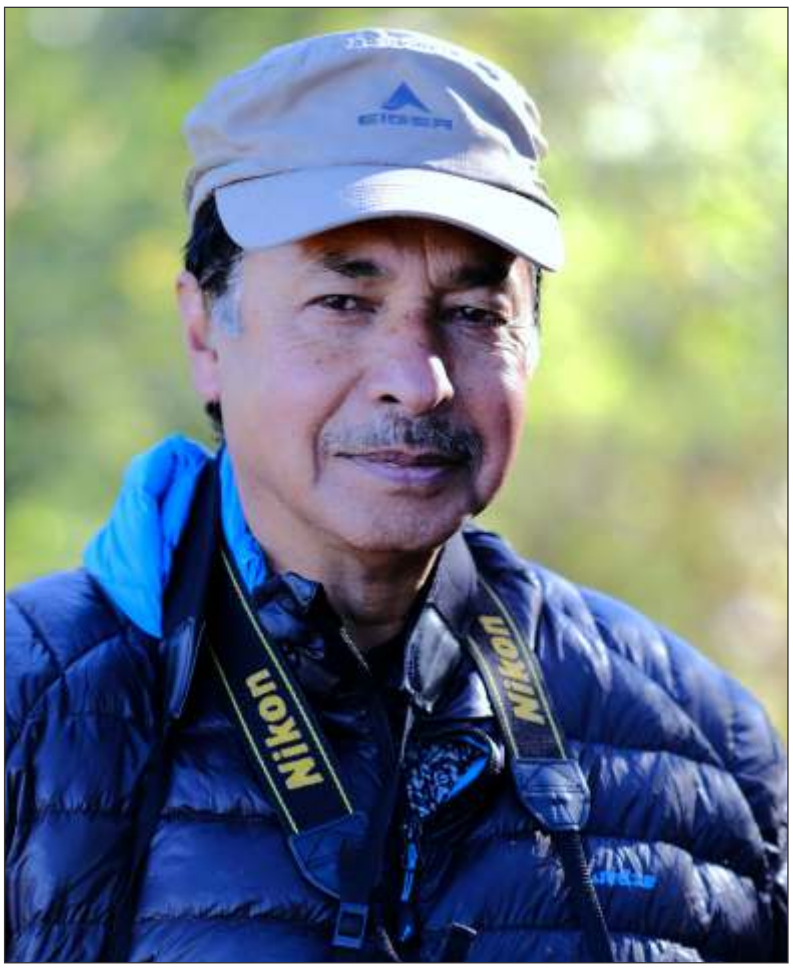

पद्मश्री अनूप शाह

किसी परिचय के मोहताज नहीं है अनूप शाह। अनूप शाह...एक ऐसा नाम जो कि हिमालय की खूबसूरत फोटोग्राफी की दुनिया से जुड़ा हुआ है।

उत्तराखंड के मशहूर लैंडस्केप फोटोग्राफर अनूप शाह ने कई राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार अपने नाम किए हैं। जो भी उन्हें जानते होंगे उन्हें यह नहीं मालूम होगा कि वह एक उम्दा पर्वतारोही, प्रकृतिवादी, मक्खियां पालन, मशरूम एक्सपर्ट और नैनीताल माउंटेनियरिंग क्लब (एनटीएमसी) के चेयरमैन भी हैं।

किशोरावस्था से ही उन्होंने पहाड़ों की खूबसूरती की खोज शुरू कर दी थी। वह अपने पिता स्वर्गीय श्री सीएल शाह थुलघरिया के साथ उत्तराखंड हिमालय पर यात्रा पर जाते थे। उन यात्राओं के दौरान उन्होंने प्रकृति का अप्रतिम सौंदर्य देखा। तब उन्हें ईश्वर की इस छटा को कैमरे में उतारने की सोची। उनके पिता ने उनकी कला को समझा और वर्ष 1964 में एक कैमरा गिफ्ट किया, अग्फा आइसोली। यह वह समय था जब अनूप ने फोटोग्राफी की दिलचस्प दुनिया में अपने कदम बढ़ाए।

श्री अनूप शाह एक प्रशिक्षित पर्वतारोही हैं जिन्होंने अपने कई अभियान पूरे किए हैं। उन्होंने अपनी प्राथमिक ट्रेनिंग एनडीएमसी, नैनीताल से ली जो कि उनके पिता ने 1968 में स्थापित किया था। इसके पश्चात उन्होंने नेहरू इंस्टीट्यूट में माउंटेनियरिंग (एनआईएम) से बेसिक एडवांस माउंटेनियरिंग में प्रशिक्षण प्राप्त किया। मात्र दो साल के अंतर ही अपने आप को एक पर्वातारोही सिद्ध किया और वह ऑल इंडिया एनसीसी पंचचौली अभियान में वर्ष 1970 में चुने गए।

वह पहली भारतीय टीम के उन छह लोगों में एक थे जिन्होंने वर्ष 1972 में माउंट नंद खत पर चढ़कर फतह हासिल की। यह अभियान नैनीताल माउंटेरियरिंग क्लब द्वारा आयोजित किया गया था। उन्होंने नंदा देवी क्लाइंबिंग साइंटिफिक अभियान का नेतृत्व किया जो कि एनटीएमसी व टीम के सदस्यों का द्वारा आयोजित किया गया था तथा 1974 में देवीस्थान चोटी भी चढ़ी। वह 1977 में इंडो जापानी माउंट नंदा देवी अभियान के सदस्य थे साथ ही वर्ष 1979 में जापानी अभियान (साकू एसेंट क्लब) माउंट पनवली द्वार के भी।

1981 के भागीरथी 2 अभियान के दौरान उनके भाई निर्मल की अचानक हुई मृत्यु के कारण अनूप शाह ने व्यक्तिगत कारणों से पहाड़ों पर चढ़ाई से खुद को अलग कर लिया किंतु पहाड़ों व क्लाइबिंग से लगाव उनका अबतक बना हुआ है। 53 वर्ष के अंतर के बाद उन्होंन 1992 में ट्रेल पास सफलतापूर्वक पूरा किया।

एक अन्य उपलब्धि उनकी यह भी है कि वह नंदा देवी सैंक्चुरी को चार बार पूरा कर चुके हैं। इसके अलावा वह कई हिमालयन पास जैसे मिलाम मलारी उताधुरा पास, भुंधर पास, कालिंदी खल पास, लम्खगा पास इत्यादि पार कर चुके हैं।

अनूप शाह एक ऐसी शख्सियत हैं जो बोलते कम हैं और अपने अंदाज़ से सब कह जाते हैं। वह सर्वावल तकनीक में विशेषज्ञ हैं तथा उनकी विशेषज्ञता पौधों व सब्जियों, जंगली खाद्य पौधे व पशु व्यवहार में हैं। वह नैनीताल में अपनी पत्नी व बेटे के साथ रहते हैं।

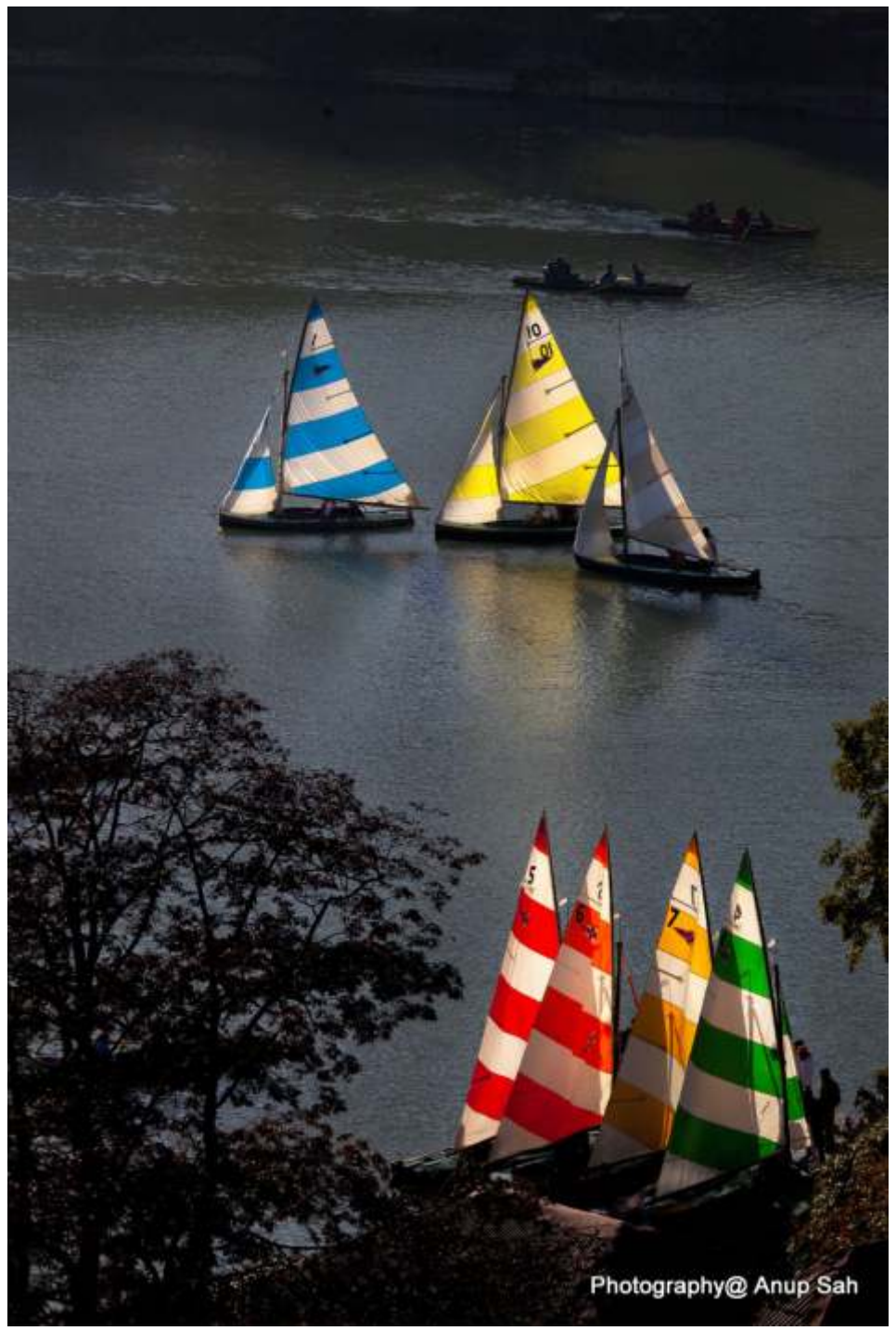

STUDIO NEWS
लखनऊ, सोमवार, 6 मई 2019 से 5 जून 2019

कैमरा एक उपकरण है जो लोगों को सिखाता है कि कैमरे के बिना कैसे देखा जाए - डोरोथे लांगे

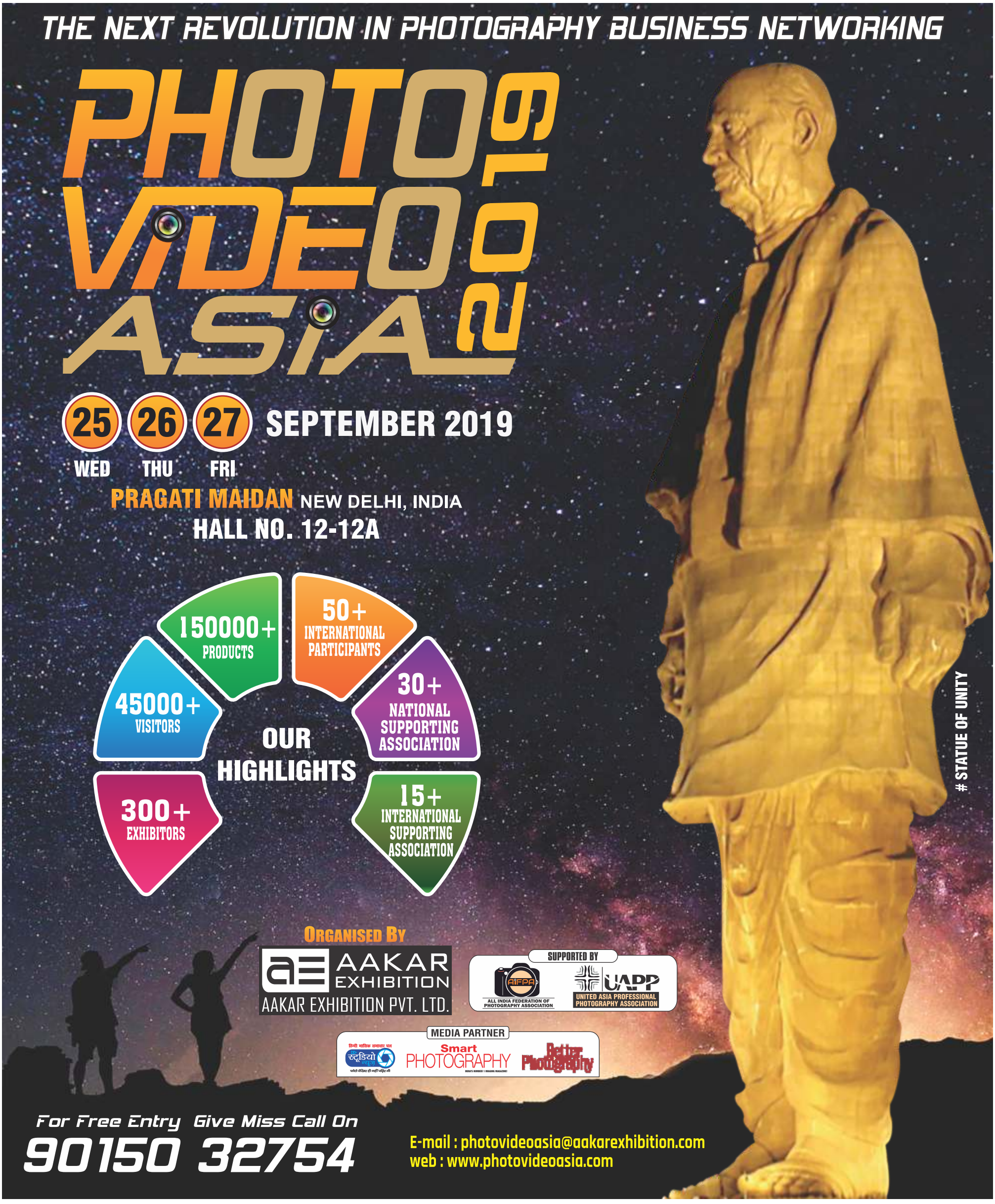
THE NEXT REVOLUTION IN PHOTOGRAPHY BUSINESS NETWORKING
PHOTO VIDEO ASIA
25 WED
26 THU
27 FRI
SEPTEMBER 2019
PRAGATI MAIDAN NEW DELHI, INDIA
HALL NO. 12-12A
150000+ PRODUCTS
50+ INTERNATIONAL PARTICIPANTS
45000+ VISITORS
30+ NATIONAL SUPPORTING ASSOCIATION
OUR HIGHLIGHTS
300+ EXHIBITORS
15+ INTERNATIONAL SUPPORTING ASSOCIATION
STATUE OF UNITY
ORGANISED BY
AAKAR EXHIBITION
AAKAR EXHIBITION PVT. LTD.
SUPPORTED BY
AIFPA ALL INDIA FEDERATION OF PHOTOGRAPHY ASSOCIATION
UAPP UNITED ASIA PROFESSIONAL PHOTOGRAPHY ASSOCIATION
MEDIA PARTNER
स्टूडियो न्यूज
Smart PHOTOGRAPHY
Better Photography
For Free Entry Give Miss Call On
90150 32754
E-mail : photovideoasia@aakarexhibition.com
web : www.photovideoasia.com

STUDIO NEWS
लखनऊ, सोमवार, 6 मई 2019 से 5 जून 2019

अगर आप फोटोग्राफ के जरिये सड़क की महक को महसूस कर सकते हैं तो यह स्ट्रीट फोटोग्राफी है। - ब्रूस गिल्डेन

महान विभूतियाँ

ईश्वर हनुमंथ राव
(1930 - 2004)

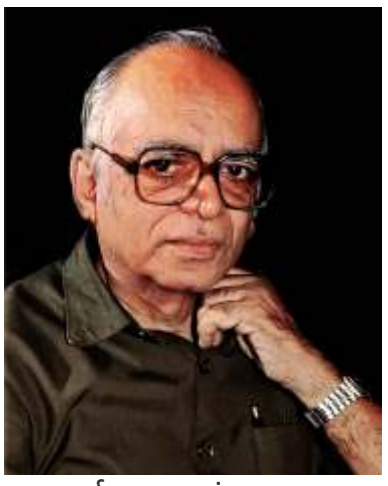

ईश्वर हनुमंथ राव

वाइल्ड लाइफ में महारथ हासिल करने वाले बहुत कम व्यक्ति हुए हैं, निःसंदेह इनमें से एक ईश्वर हनुतंथ राव हैं। विश्वविख्यात शख्सियत व अद्भुत वाइल्डलाइफ फोटोग्राफर। 1930 में हनुमंथ जी का जन्म एक संपन्न बिजनेस परिवार में हुआ, फोटोग्राफी के प्रति उनका प्रेम बचपन से ही था।

बालपन में ही उन्होंने रोशनी और परछाई में ऑब्जेक्ट्स उस कैमरे से शूट करने शुरू कर दिए जो उन्हें तोहफा मिला था। अपने स्टाउटिंग के दिनों में उन्हें वाइल्डलाइफ के प्रति खुद का लगाव महसूस हुआ। यह वह मौका था जब वह प्रकृति के बेहद करीब आ गए। उनके पिता उनकी फोटोग्राफी को लेकर उलझन में थे लेकिन फिर भी हनुमंथ की शूट की हुई तस्वीरें संभाल कर रखते थे।

वाइल्डलाइफ फोटोग्राफी को लेकर उनका जुनून इतना मजबूत था कि उन्होंने अन्य किसी विषय वस्तु को अधिक शूट किया ही नहीं। अपने 50 साल के फोटोग्राफी कैरियर में उन्होंने सभी सैंचुअरी और टाइगर रिजर्व में एक बार नहीं बल्कि कई-कई बार जाकर फोटोग्राफी की।

प्राकृतिक दुनिया को कैप्चर करने के उनके शौक की वजह से उन्होंने करीब 17 बार भारत भ्रमण किया। अपने बेहद प्रेरक और लंबे कैरियर में हनुमंथ ने विविध प्रकार के दुर्लभ मैमेल, चिड़ियों, कीड़े तथा रैप्टाइल आदि को शूट किया। वाइल्डलाइफ को शूट करने वाले सबसे कठिन कैमरा- मीडियम फॉर्मेट हैसेलब्लैड कैमरे का भी उन्होंने इस्तेमाल किया।

यूएसए, यूके, जर्मनी, फ्रांस, स्पेन,

स्विटजरलैंड व जापान कुछ ऐसे देश हैं जहां उनके कार्य को मार्केट किया गया। हालांकि इन देशों की लिस्ट बहुत लंबी है। हनुमंथ राव जी अपनी तस्वीरें लगभग 1700 पब्लिकेशन में छप चुकी हैं। इनमें नैशनल ज्योग्राफिक, लाइफ, रीडर्स डायजेस्ट, इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका, टाइम, माइक्रोसॉफ्ट व बीबीसी शामिल हैं।

भारत में, अनगिनत जर्नल व मैगजीन ने उनकी तस्वीरें प्रयोग की हैं, और साथ ही यह भी कहा है कि हनुमंथ सबसे ज्यादा पब्लिश होने वाले फोटोग्राफर में से एक हैं।

अधिकतर वाइल्डलाइफ फोटोग्राफर अफ्रीका में शूट करने के ख्वाब देखते हैं, किंतु उनका केंद्र भारत के जंगल थे और वह भारतीय जंगलों को हर हाल में शूट करना चाहते थे। उन्होंने सदैव भारत को काम करने के लिहाज से सर्वश्रेष्ठ बताया।

जैसा उनकी पत्नी ने बताया, वह कभी भी विदेश नहीं गए वाइल्डलाइफ शूट करने। उनका मानना था कि भारत पर्याप्त है पूरा जीवन वाइल्डलाइफ शूट करने के लिए। इतना विस्तापूर्वक फोटोग्राफी के बाद भी वह कहते थे कि इंडियन वाइल्डलाइफ का दस फीसद ही वह कैप्चर कर पाए हैं।

बेहद दिलचस्प बात है कि हनुमंथ जी की पत्नी श्रीमती रतना बाई, उनके साथ कई बार अभियानों पर जाती थीं। एक बार हनुमंथ जी ने कहा था, पत्नियां सबसे अच्छी असिस्टेंट होती हैं क्योंकि उन पर पूरी तरह से भरोसा किया जा सकता है।

किसी भी वाइल्डलाइफ फोटोग्राफर के लिए संयम रखना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना की फोटो लेना आना। उनका संयम इतना था कि वह चिड़ियों के व सही फ्रेम के इंतजार में घंटों बैठे रहते थे। जब तक खूबसूरत प्रकार से तस्वीरें न ले लें वह हिलते नहीं थे।

वाइल्डलाइफ फोटोग्राफी में उम्दा काम करने के लिए उन्हें कई सम्मान व अवॉर्ड मिले। इसमें यूरोपियन Hon. AFIAP शामिल है जो उन्हें सन 1960 में मिला था। इसके अलावा वर्ष 1987 में कोडैक अवॉर्ड फोटोग्राफी एक्सिलेंस के लिए मिला था। कर्नाटक सरकार के तीन महत्वपूर्ण अवॉर्ड से भी उन्हें नवाज़ा जा चुका है- स्टेट राज्योत्सव अवॉर्ड 1986 में, कर्नाटक स्टेट इनवायरमेंट अवॉर्ड 1993 में और कर्नाटक ललित कला अकादमी सम्मान 1997-98 में।

वर्ष 1972 में उन्होंने सैलून व प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेना बंद कर दिया और अपना जीवन युवा वाइल्डलाइफ फोटोग्राफर्स को राह दिखाने व प्रेरणा देने में लगा दिया। मित्र व प्रशंसक उनके लिए बेहद खास थे। यदि कोई फोटोग्राफी की बारीकियां उनसे पूछ ले तो वह घंटों लगा कर अपने वर्षों का ज्ञान व अनुभव साझा करते थे।

वह एक पारिवारिक व्यक्ति किंतु एक कर्मठ व लक्ष्य के प्रति निर्धारित व्यक्ति थे। समर्पित, जुनून से भरे हुए और बेहद शालीन व्यक्ति। फ्रांस में अपना पहला कैमरा वर्ष 1974 में खरीदने के बाद उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन अपने पहले प्रेम के सुपुर्द कर दिया-यानि कि वाइल्डलाइफ फोटोग्राफी। वह व्यक्ति जिससे परिवार के टेक्स्टाइल बिजनेस को संभालने की उम्मीद की जाती थी, उन्होंने वह राह चुनी जो वह हमेशा से चाहते थे-वाइल्डलाइफ व फोटोग्राफी।

अनगिनत भारत के जंगलों की अभूतपूर्व तस्वीरें पीछे छोड़कर, वर्ष 2004 में, 74 की आयु में उनका निधन हो गया।

अनिल रिसाल सिंह
MFIAP, ARPS, Hon. FIP, Hon. LCC, Hon. FSoF, Hon. FPAC, Hon. TPAS, Hon. FSAP, Hon. FICS, Hon. PESGSPC, Hon. FPSNJ
पूर्व अध्यक्ष, फेडरेशन ऑफ इण्डियन फोटोग्राफी

स्टूडियो लाइटिंग का प्रैक्टिकल गाइड

मुकेश श्रीवास्तव

FIE, FFIP, EFIAP

इंजीनियर, फोटोग्राफर, लेखक, पूर्व निदेशक (ई), भारत सरकार
निदेशक, सेण्टर फॉर विजुअल आर्ट्स
निकॉन मेण्टर (2015-2017) एवं अध्यक्ष, धनबाद कैमरा क्लब

स्टूडियोः

चलिए हम बात करते हैं वॉल फिनिश और स्टूडियो के लेआउट की।

स्टूडियो की सभी दीवारें और छतों को 18 फीसद ग्रे रंग में पेंट (मैट फिनिश) किया जाना चाहिए।

वैसे सामान्य रूप से आपको रेडी मेड डिस्टेंपर मिलना मुश्किल है इसलिए बेहतर होगा कि आप 18 फीसद ग्रे कार्ड लेकर पेंट शॉप जाएं और बनवा लें।

पर ग्रे क्यों??

जैसा कि आप जानते हैं कि 18 फीसद ग्रे रंग न्यूट्रल होता है और यह कोई भी कलर कास्ट को रिफ्लेक्ट नहीं करता। इसलिए वॉल के रंग से सब्जेक्ट के चेहरे पर रिफ्लेक्शन से बचने के लिए वॉल फिनिश 18 फीसद ग्रे होना चाहिए।

स्टूडियो साइज-

यदि आप पोट्रेट या फैशन फोटोग्राफर हैं तो आपको सीमलेस बैकग्राउंड पेपर का 9 फुट वाइड रोल प्रयोग करने का विकल्प चुनना चाहिए। दूसरी ओर लाइट के लिए आपको अधिक जगह चाहिए होगी, इसलिए न्यूनतम चौड़ाई 15 फीट होनी चाहिए।

चूंकि कैमरे व लाइट को अधिक जगह देने के लिए एवं बैकड्रॉप से कम से कम 3-5 फीट दूर सब्जेक्ट को रखा जाना चाहिए, आपको 25-30 फीट लंबाई का स्टूडियो चाहिए।

छत की हाइट 10-15 फीट होनी चाहिए ताकि बड़े लाइट शेपर उनमें आ सकें जैसे ऑक्टा 135 सेंटिमीटर, और वह सब्जेक्ट के सिर के ऊपर की ओर प्लेस किया जा सके।

केवल सिर के शॉट के लिए 12×15 फीट साइज काफी है, लेकिन पूरी लेंथ और प्रोफेशनल काम के लिए आपको स्टूडियो का 15×30 फीट साइज चाहिए होगा।

स्टूडियो लाइटिंग पैटर्न-

जिस प्रकार लाइट और परछाई चहरे पर पड़कर अलग-अलग आकार बनाते हैं, यही लाइटिंग पैटर्न है।

चार पोट्रेट लाइटिंग पैटर्न यह हैं-

स्प्लिट लाइटिंग

लूप लाइटिंग

रेम्ब्रैंड लाइटिंग

बटरफ्लाइट लाइटिंग

ब्रॉड व शॉर्ट लाइटिंग भी हैं जिनमें अधिक स्टाइल है, और ऊपर दिए लगभग सभी पैटर्न के साथ प्रयोग में आ सकती हैं।

सभी को समझते हैं-

1- स्प्लिट लाइटिंग

स्प्लिट लाइटिंग चेहरे को दो भागों में बांट देता है। एक ओर लाइट में और चेहरे का दूसरा भाग परछाई की ओर। आर्टिस्ट के पोट्रेट के लिए यह ड्रामाटिक इमेज बनाता है। यह महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों की पोट्रेट के लिए अधिक इस्तेमाल किया जाता है। वैसे इसका कोई नियम नहीं हैं।

तस्वीर 1. स्प्लिट लाइटिंग

तस्वीर. 3 लूप लाइटिंग

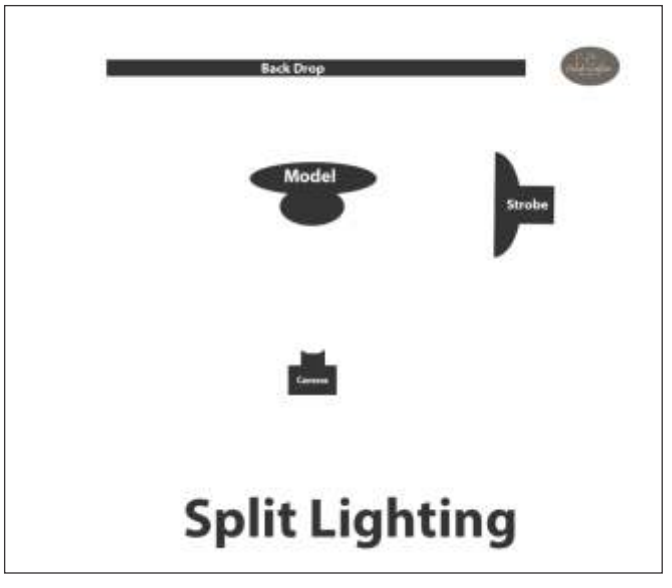

तस्वीर 2

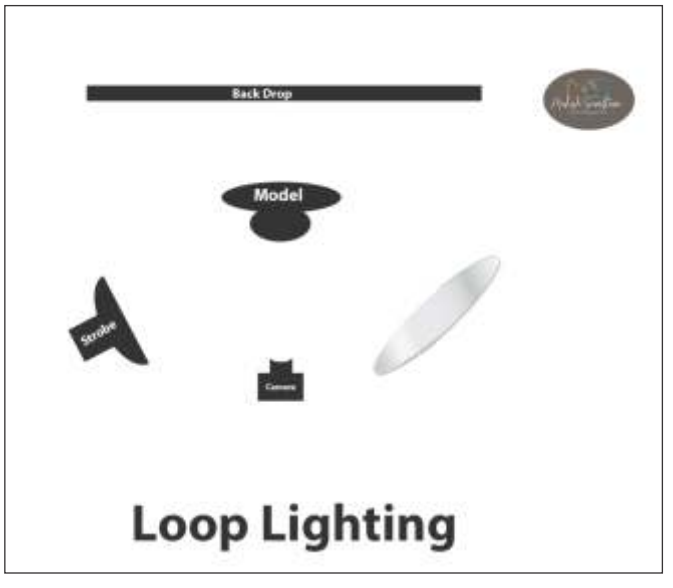

तस्वीर 4

स्प्लिट लाइटिंग पाने के लिए लाइट सोर्स को सब्जेक्ट के दाईं व बाईं ओर 90 डिग्री पर रखें, संभव हो तो सब्जेक्ट के जरा सी पीछे की ओर। देखें कि कैसे लाइट पड़ती है और अपने अनुसार एडजस्ट करें। स्प्लिट लाइटिंग में परछाई की तरफ वाली आंख लाइट पकड़ लेती है।

2. लूप लाइटिंग

नाक और गाल पर छोटी परछाई बनाने को लूप लाइटिंग कहते हैं। लूप लाइटिंग क्रिएट करने के लिए लाइट सोर्स को आंख के स्तर से थोड़ा उपर रखने की जरूरत है, और कैमरे से 30-45 डिग्री की पर।

इस इमेज को देखिए जहां परछाई गिर रही है, बाईं ओर आप नाक की छोटी परछाई देख सकते हैं। लूप लाइटिंग में नाक और गाल की परछाई आपस में छूती नहीं है। शैडो को छोटा और नीचे की तरफ रखें।

3. रेम्ब्रैंट लाइटिंग

रेम्ब्रैंट लाइटिंग का नाम इसलिए पड़ा है क्योंकि रेम्ब्रैंड पेंटर अकसर लाइट के इस पैटर्न को अपनी पेटिंग्स में प्रयोग करता था, आप यहां उसकी अपनी पोट्रेट में देख सकते हैं।

STUDIO NEWS
लखनऊ, सोमवार, 6 मई 2019 से 5 जून 2019

"शटर खोलने से पहले देखिए और सोचिए। दिल और दिमाग कैमरे के असली लेंस हैं" - यूसुफ कार्श

तस्वीर. 3 लूप लाइटिंग

गालों पर पड़ रही त्रिकोणीय लाइट से रेम्ब्रैंट लाइटिंग की पहचान होती है।

लूप लाइटिंग में ऐसा नहीं होता। लूप में नाक और गाल की परछाई आपस में टकराती नहीं। रेम्ब्रैंट लाइटिंग में वह आपस में मिलती हैं और बीच में एक छोटा त्रिकोण बनता है। ढंग से रेम्ब्रैंट लाइटिंग बनानी हो तो ध्यान रखिए कि परछाई की तरफ वाली आंख में लाइट हो और उस पर कैच लाइट पड़ रही हो। अन्यथा आंख में चमक नहीं आएगी और बहुत उदासीन लगेगी। रेम्ब्रैंट लाइट ज्यादा ड्रामाटिक है।

इसे सही तरह से इस्तेमाल करना जरूरी है।

तस्वीर. 6 रैम्ब्रैंट लाइटिंग

तस्वीर 7

रैम्ब्रैंड लाइटिंग बनाने के लिए सब्जेक्ट को थोड़ा सा लाइट से दूर मुड़ जाना चाहिए। लाइट सिर के उपर 45 डिग्री पर होना चाहिए।

इसका मतलब मॉडल की नाक के अनुसार लाइट 45 डिग्री पर होना चाहिए और लाइट की हाइट 45 डिग्री होनी चाहिए।

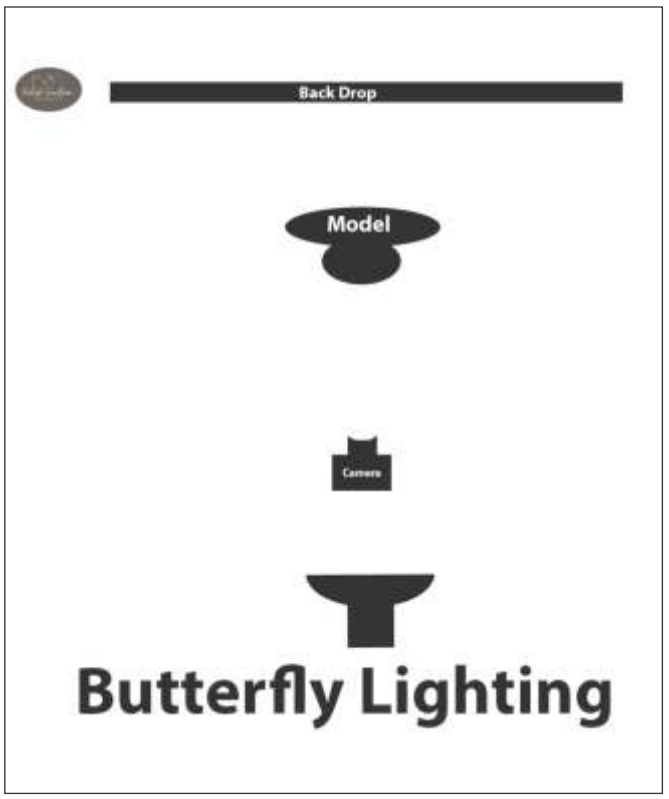

तस्वीर 9

4- बटरफ्लाई लाइटिंग

तस्वीर 8 बटरफ्लाई लाइटिंग

बटरफ्लाई लाइटिंग यानी मुख्य लाइट सोर्स कैमरे के ऊपर या ठीक पीछे रखने से नाक के नीचे बनने वाली परछाई।

यह ज्यादातर ग्लैमर स्टाइल शॉट लेने के लिए प्रयोग की जाती है और साथ ही चीक और चिन के नीचे बनाने वाली शैडो के लिए।

लाइट सोर्स जो कि सीधा कैमरे के पीछे से और हल्का सा सब्जेक्ट के आंखों व सिर के ऊपर से है उससे बटरफ्लाई लाइटिंग क्रिएट होती है। लाइट को 0 डिग्री व 60 डिग्री पर रखा जाना चाहिए।

इसका मतलब है कि मॉडल की नाक के अनुसार लाइट 0 डिग्री के एंगल पर होनी चाहिए। लाइट की हाइट 60 डिग्री के एंगल पर होना जरूरी है।

इसकी कमी कभी-कभी चिन के नीचे रिफ्लेक्टर रखकर पूरी की जाती है। ऐसे में सब्जेक्ट खुद भी रिफ्लेक्टर पकड़ सकता है।

इस प्रकार से सब्जेक्ट की चीक बोन और पतला चेहरा हाईलाइट होता है।

इस पैटर्न से सब्जेक्ट का चेहरा खिलकर आता है चाहे वह पतला चेहरा हो चीक बोन हाईलाइट करना हो। गोल, बड़ा चेहरा या पतला चेहरा इससे अच्छी तरह से उभर कर आता है।

सीनकटर

फोटोग्राफी का महत्व दर्शाने वाली ये फिल्में

त्रिलोचन एस. कालरा

वरिष्ठ फोटो पत्रकार एवं एमिटी विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर

सीनकटर में फिल्म "फोटोग्राफ" के बाद जिक्र उन फिल्मों का जिनमें अभिनेता को कथानक के लिहाज़ से या नाटकीय परिस्थितियों में कैमरे के साथ फोटोग्राफर के रूप में दर्शाया गया। ऐसी तमाम फिल्में लव स्टोरीज़ पर आधारित रही हैं। इनमे नायक-नायिका का प्रेम होता है तो प्रेम में बाधा बनने वाला विलेन होता है। बुराई पर अच्छाई की जीत का सन्देश देने वाली ऐसी कई फिल्मों के साथ जासूसी या राष्ट्रभक्ति पर अथवा ज्वलंत सामजिक मुद्दों पर भी फिल्में आयी। इनमे भी नायक को किसी न किसी कार्य या पेशे से जुड़ा दिखाया गया था, इनमें भी जितने चरित्र निभाने वाले किरदार सिनेमा के पर्दे पर नज़र आये उनमें इन्हें पुलिस अधिकारी, वकील, चोर, स्मगलर, हत्यारे, बेरोज़गार ईमानदार युवक, शायर, शिक्षक, डकैत और मिल मालिक या मजदूर के किरदार में परदे पर दिखे अभिनेताओं ने अपने किरदार बड़ी शिद्दत से निभाए। लेकिन एक जुझारू फोटोग्राफर के रूप में एक फोटोग्राफर के संघर्ष को दिखाने वाले किरदार कम ही दिखे। पुरानी फिल्मों के दौर को देखें तो फोटोग्राफी जैसे क्रिएटिव पेशे को एक बदनाम पेशे के रूप में भी प्रदर्शित किया गया, जिससे आम लोगों के मन में फोटोग्राफर की एक विचित्र छवि घर कर गयी। जिसका खामियाज़ा अब तक इस पेशे से जुड़े लोगों को भुगतना पड़ता है। ऐसे किरदार वाली फिल्मों में विलेन के हाँथ में ही कैमरा दिखाया गया। जो किसी की निजी ज़िंदगी के दृश्य खींच कर उन्हें ब्लैकमेल करता दिखा। ऐसी फ़िल्में देखी हों तो याद कीजिये, ऐसे डायलॉग जिनमे ग्रे शेड निभाने वाला विलेन नायक या नायिका को डरा कर रूपये ऐंठने के लिए बोलता दिखता था, अगर चाहते हो ये तस्वीरें तुम्हारे घरवालों तक न पहुंचे आज तो आज शाम काली पहाड़ी के पीछे, पांच लाख रूपए लेकर आ जाना, पुलिस को खबर की तो अंजाम बुरा होगा, बैकग्राउंड म्यूजिक के बीच बोले गए ऐसे संवाद सीन में डर और बढ़ा देते थे। फिर ऐसी फ़िल्में भी आयीं जिनमे देश भक्त नायक को अंडरकवर एजेंट, सी आई डी ऑफिसर के रूप में दिखाया गया, जो दुश्मनो के अड्डे से खास डाक्यूमेंट्स की फोटो खींचता हुआ दिखाया गया। रोमांटिक फिल्मों की बात करें तो इनमें नायक गाना-गाते हुए नायिका के सौंदर्य की फोटो कैमरे से निहारता दिखा। पुराने मशहूर अभिनेताओं में सुनील दत्त फिल्म "मेरा साया" में, राजकपूर फिल्म "दो जासूस" में उस दौर के प्रसिद्ध फोटोग्राफी कैमरे टी एलआर ट्विन लेंस रिफ्लेक्स या रेंज फाइंडर कैमरे के चित्र लेते दिखाए गए। फिल्मों का कथानक चूँकि हमारे सामजिक जीवन से ही लिया जाता रहा है। इसलिए थोड़ी देर के लिए ही सही किन्तु फिल्म के सीन में कैमरा लिए नायक या नायिका को दिखाया जरूर गया। इससे यह प्रमाणित होता है कि फोटोग्राफी भी हमारे सामाजिक जीवन का हिस्सा रही है, इसलिए फिल्मों का नायक जितने विविध प्रकार के किरदार खूबसूरती से निभाता रहा है, अगर उसे सही मायने में एक फोटोग्राफर का किरदार निभाने को मिला तो उसने एक कुशल फोटोग्राफर की तरह कैमरा लेकर तस्वीरें लेने की सही मुद्रा में अभिनय किया। नए दौर की कुछ फिल्मों ऐसा दर्शाया भी गया, जिनमें नायक हक़ की आवाज़ के लिए, खलनायक के खिलाफ पत्रकार के रोल में किसी ऐसे कांड की तस्वीरें खींच कर उनको सुबूत के तौर पर अदालत में पेश करता हैं। अब बात करते हैं कुछ ऐसी पुरानी फिल्मों की जिन्हे कई दिन तक यू-ट्यूब पर फ़ास्ट-फॉरवर्ड कर देखा तो मरहूम शम्मी कपूर साहब की एक फिल्म "ब्लफ़ मास्टर" दिखी इसमें वो एक बस स्टॉप पर अभिनेत्री सायराबानो की एक मनचले को डांटते हुए फोटो करते हैं। इसमें वो उस दौर का फिल्म कैमरे और ऐसी एक्टर्नल फ़्लैश के साथ फोटो करते हुए दिखे जिसमे हर बार अगली तस्वीर के लिए फोटोग्राफर को "फ़्लैश का बल्ब" बदलना पड़ता था। इसमें वो फिल्म की नाटकीय परिस्थितियों में बतौर एक प्रेस फोटोग्राफर के रूप में और इवेंट की भी तस्वीरें करते नज़र आये थे, हालाँकि पुरानी ऐसी और भी फ़िल्में रही होंगी जिन्हे सर्च करने का वक़्त नहीं था। फिर रंगीन सिनेमा की बात करें तो वो फ़िल्में भी दिखी जो हास्य के साथ ही मीडिया पर भी आधारित थी। वर्ष 1983 में आयी फिल्म "जाने भी दो यारों" की कहानी के केंद्र में था "ब्यूटी फोटो स्टूडियो" का उद्घाटन। कुंदन शाह की इस हास्य-फिल्म के पहले दृश्य में शायद पहली बार शौकिया और प्रोफेशनल स्टूडियो चलाने वाले फोटोग्राफर के रूप में विवेक वासवानी और उनके मित्र नसीरूद्दीन शाह फ्रेम में थे। शायद इसी फिल्म में पहली बार डार्क रूम की रेड लाइट में नायक को फोटो प्रिंट करते दिखाया गया था। यही नहीं बल्कि संवादों में एक्सपोज़र और कम्पोजीशन जैसे फोटोग्राफी तकनीकी से जुड़े शब्दों को जगह देने से फिल्म ने बड़ी सार्थकता से फोटोग्राफी पेशे के संघर्ष को बखूबी दिखाया यह फिल्म फोटोग्राफ में क़ैद हुए एक गुनाह की गवाह बनती हैं। 2009 के करीब आयी फिल्म "थ्री -इडियट" की बात करें जिसमे नायक आमिर खान का मित्र अभिनेता माधवन वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर बनना चाहता है लेकिन घर वाले मेडिकल की पढ़ाई पे जोर देते है। फिल्म ने यह सन्देश दिया कि वो करो जो दिल चाहता हो। फिल्म ने सन्देश दिया कि फोटोग्राफी को भी बतौर करियर अपनाया जाये तो क्या हर्ज़ है। साल 2000 में आयी अक्षय कुमार की फिल्म "8×10" में उन्हें कैमरे के साथ तो नहीं दिखाया गया लेकिन वे किसी पुरानी तस्वीर को मोबाइल में देखें या हार्ड कॉपी फोटो को देखते-देखते आँखों से चेतना शून्य होकर (गहन निद्रा) में चले जाते हैं और तस्वीर खींचते वक़्त नायक या नायिका के साथ क्या हुआ था। उन काल खण्डों में जाकर जो देखते हैं। उन क्षणों के दृश्य उनकी आँखों की पुतलियों में नज़र आने लगते हैं। साल 2008 में आई आमिर खान की फिल्म "गज़नी" को याद करिये इसमें वो अपनी याददाश्त खो बैठते हैं। रोज़ मिलने वाले लोगों और जगहों की पहचान करने के लिए गले में "पोलोराइड कैमरा" लेकर तस्वीरें खींचते हैं। इस कैमरे से तस्वीरें क्लिक होने के बाद तुरंत तस्वीरें निकल आती हैं। इस फिल्म ने कैमरे की सार्थकता और उससे लिए चित्रों द्वारा स्मृति संजोने की आवश्यकता को अच्छे ढंग से दिखाया है। 2004 में आयी मीडिया पर आधारित फिल्म "पेज 3" में नायिका रिपोर्टर और सहयोगी कलाकार प्रेस फोटोग्राफर के भूमिका में थे। इस फिल्म ने मीडिया जगत की कड़वी सच्चाई जाहिर की। साल 2000 के करीब आयी अक्षय कुमार और जॉन अब्राहम की फिल्म "गरम मसाला" आयी इसमें ये दोनों मस्त मलंग टाइप के किरदार में थे और हसीनाओ की दिलकश फोटो खींचते - मस्ती करते दिखे। 2005 में राजपाल यादव की फिल्म "मै मेरी पत्नी और वह" आयी इसमें फिल्म के एक सीन में जब वे शादी के बाद अपनी पत्नी के साथ तस्वीर खिचवाते हैं और दुल्हन उनसे लम्बी होती है तो वे पशोपेश में पड़ते हैं तो उस वक़्त फिल्म में हमें यानि "सीन कटर" त्रिलोचन को बतौर वेडिंग फोटोग्राफर परदे पर उनकी फोटो लेते हुए दिखाया गया। 2009 में आयी रणवीर कपूर की फिल्म "वेक अप सिड" में भी नायक को जुनूनी तौर पे फोटोग्राफर दिखाया गया कि उसे सिर्फ फोटोग्राफी करना ही पसंद है। यह फिल्म भी फोटोग्राफी को प्रमोट करती दिखी। 2007 में आयी महानायक अमिताभ बच्चन की फिल्म "निशब्द" की बात करें अमिताभ को डिजिटल कैमरे से तस्वीरें करते हुए बतौर शौकिया छायाकार कई बार दिखाया गया और डार्क रूम की लाल रौशनी में फोटो प्रिंट करते हुए भी दिखाया गया। अंत में बात करते हैं मीडिया पर ही आधारित फिल्म "जे डी" की तो इस फिल्म में नायक रिपोर्टर है और सहयोगी छायाकार को फिल्म कैमरे की जगह डिजिटल कैमरा देते हुए दिखाया गया और सन्देश दिया कि फिल्म का जमाना अब गया, डिजिटल कैमरे से और आसानी से फोटो कर सकते हैं। इत्तफ़ाक़ से इस फिल्म में हमें फोटोग्राफर नहीं बल्कि एक न्यूज़ पेपर मालिक "सिंघानिया" के किरदार में थोड़ा लम्बा रोल मिला था। ये एक ऐसी खास फिल्म थी कि इसमें नायक और नायिका को छोड़कर अधिकांश कलाकार मीडिया जगत से लिए गए जो सालों से पत्रकारिता के पेशे से जुड़े रहे। ऐसी फिल्मों ने कहीं न कहीं फोटोग्राफर या फोटोग्राफी को फिल्म में दिखा कर फोटोग्राफी का क़र्ज़ चुकाया तो जरूर हैं। लेकिन अभी भी उम्मीद है कि कोई संजीदा फिल्म निर्माता कोई ऐसी फिल्म जरूर बनाये जिसमे फोटोग्राफर को, फोटोग्राफी को तवज्ज़ो मिले और फोटोग्राफी और प्रमोट हो।

STUDIO NEWS
लखनऊ, सोमवार, 6 मई 2019 से 5 जून 2019

फोटोग्राफी समय का ऐसा इतिहास है जिसे दोबारा नहीं लिखा जा सकता - रघु राय

दुनिया में रहना है तो काम कर प्यारे

बड़ी सफलता पाने के लिए खुद को क्या करना पड़ेगा? इसी फलसफे को बताता आनन्द कृष्ण लाल का आलेख

ये सच्चाई है और हम सब जानते हैं कि दुनिया में ख़ाली बैठ कर आराम से खाना किसी के लिए संभव नहीं हैं। मेहनत सबको करनी है, किसी को कम, किसी को ज़्यादा और किसी किसी को तो बहुत ज़्यादा। किस्मत के भरोसे बैठ कर जीवन नहीं बिताया जा सकता है। हमारी सफलता के लिए किस्मत ही 100 प्रतिशत ज़िम्मेदार नहीं है। मेरी व्यक्तिगत राय यह है कि हमारी सफलता में मेहनत 95 प्रतिशत ज़िम्मेदार है और किस्मत मात्र 5 प्रतिशत। संसार में शायद कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनको विरासत में किस्मत से सब कुछ मिला है, लेकिन उसे सम्हालने और बढ़ाने के लिए प्रयास या मेहनत उन्हें ही करनी पड़ती है। किस्मत और कर्म दोनों पर ध्यान दें, कर्म पूरा मन लगा कर करें और यह विश्वास रखें कि किस्मत भी ज़रूर साथ देगी। यदि ऐसा विश्वास रख कर कर्म करेंगे तो किस्मत भी आपको सपोर्ट करेगी। किस्मत पर विश्वास करना सही है लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा या अन्धविश्वास करके अपना नुकसान करवा लेना ठीक नहीं है। प्रसिद्ध फिल्म 'मदर इंडिया' का एक बढ़िया गाना रहा है 'दुनिया में हम आये हैं तो जीना ही पड़ेगा, जीवन है अगर ज़हर तो पीना ही पड़ेगा', एक और गाना 'ज़िंदगी हर क़दम एक नयी जंग है'। जी हाँ ज़िंदगी हर दिन हर पल एक नयी जंग के सामान है, हमें अपनी मेहनत करते रहना है।

आप भाग्यवादी नजरिये से यानि की सिर्फ भाग्य के भरोसे रह कर कभी सफल नहीं हो सकते। सच तो यही है कि हमारा भाग्य भी तभी साथ देता है, जब हम मेहनत में विश्वास रखते हैं। अगर व्यक्ति मात्र भाग्य के भरोसे रहकर सोचता है तो उसका असफल होना निश्चित ही है, क्योंकि ऐसी मानसिकता में मेहनत, दृढ़ता और काम के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना कम ही दिखाई देती है। ऐसे में भाग्य भला कैसे साथ दे सकता है?

यहाँ आपको एक कहानी बताता हूँ जिससे मेरी ऊपर कही हुई बातें ज़्यादा समझ में आएंगी। हुआ कुछ यूँ कि सुदूर एक गाँव में एक बार बाढ़ आई। एक आदमी छोड़ कर, जो कि भगवान् की बहुत पूजा पाठ करता था, वहाँ रहने वाला हर आदमी बाढ़ की विभीषिका से बचने के लिए किसी सुरक्षित स्थान पर जा रहा था। लेकिन उस आदमी ने अपनी जगह नहीं छोड़ी, उसका

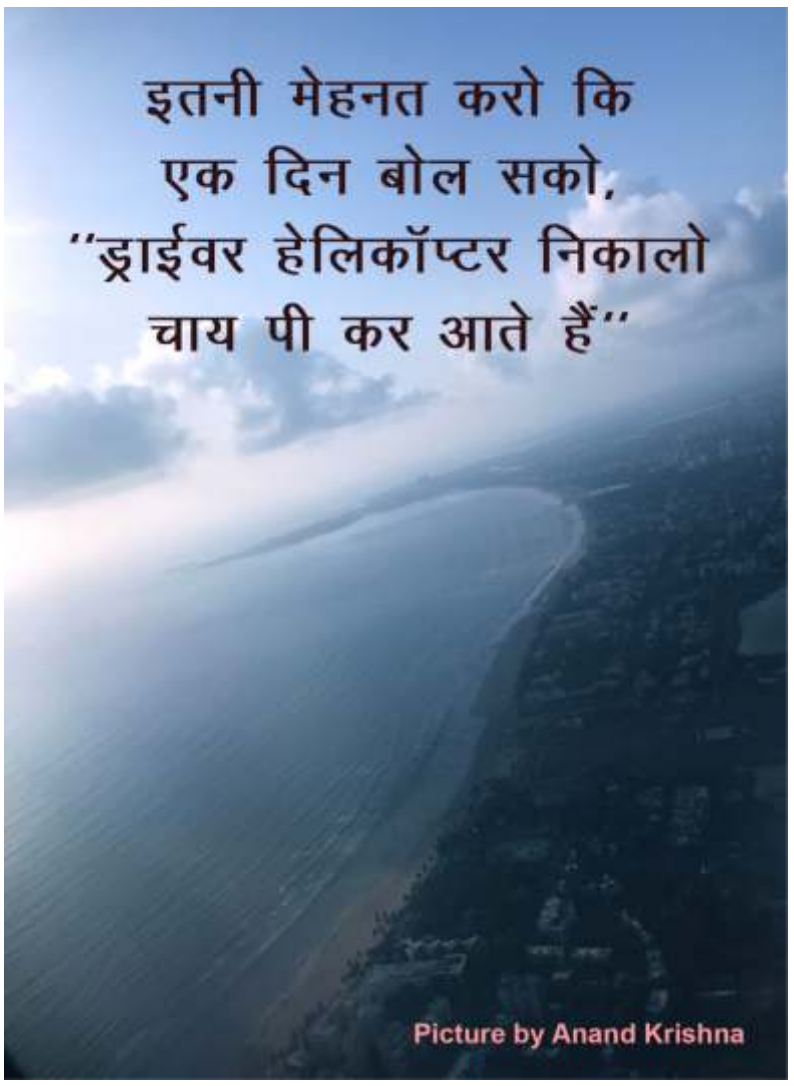

कहना था, "मुझे विश्वास है कि मेरा भगवान मेरी मदद अवश्य करेगा। जब पानी का स्तर ऊपर आया तो प्रशासन द्वारा एक जीप उसे बचाने के लिये भेजी गई। उसने यह कहकर जाने से इंकार कर दिया कि मुझे विश्वास है कि भगवान मेरी मदद करेगा और मुझे बाढ़ से बचा लेगा। पानी का स्तर अगले दिन और ऊपर गया तो वह व्यक्ति अपने घर की ऊपर की मंजिल पर चला गया। तभी एक नाव में सरकार के कर्मचारी उसे बचाने आये, पर तब भी उसने कहा, "मुझे विश्वास है कि मेरा भगवान मेरी मदद अवश्य करेगा। अगले दिन पानी का स्तर और बढ़ा तो वह व्यक्ति ऊपर छत पर चला गया। गाँव में बचे हुए लोगों के लिए सरकार की तरफ से एक हेलीकाप्टर भेजा गया। हेलीकाप्टर जब उसे बचाने पहुंचा तब भी उस व्यक्ति ने यही जवाब दिया की उसका भगवान् उसे बचा लेगा। तभी बाढ़ का पानी अचानक से और बढ़ा और वह आदमी उसमे डूब कर मर गया। ऊपर स्वर्ग में जाने पर भगवान से उसने पूछा, "आपने मुझे बचाया क्यों नहीं, जबकि मैंने दिन रात आपकी पूजा की थी और बचाने के लिए आपसे इतनी प्रार्थना की? इस पर भगवान ने जवाब दिया, "यह तुम्हारी समझ का फेर है, मैंने तुम्हे मदद भेजी थी लेकिन तुम समझ न सके। तुम्हारे पास जीप, नाव और हेलीकाप्टर किसने भेजा था? सच है, हाथ पर हाथ रखे व्यक्ति की न तो कोई मदद कर सकता है और न ही भाग्य उनका साथ देता है।

दोस्तों ! भाग्यवादी नजरिये से उबरने का एक ही तरीका है कि हम अपनी जिम्मेदारियाँ कबूल करे और किस्मत पर यकीन करने के बजाय 'वजह और नतीजे' के सिद्धान्त का पालन करे। जीवन में कोई भी लक्ष्य सिर्फ चाहत, इंतजार या सोच-विचार मात्र करने से नहीं हासिल होता है। अच्छी किस्मत भी तभी हासिल होती है जब तैयारी और अवसर का बेहतर मेल हो। कोशिश और तैयारी के बिना अच्छे संयोग नहीं घटित होते। प्रार्थनाएँ तभी स्वीकार की जाती है, जब साहस के साथ काम भी किया जाये। इसलिए सिर्फ भाग्य के भरोसे न रहे और मेहनत करे। कोई भी काम पूरे मन से करने पर ही कामयाबी नसीब होती है, यानी आप लकी भी तब होंगे जब मेहनत पूरी लगन और विश्वास से करेंगे।

चलते-चलते यही कहना चाहता हूँ कि मेहनत सीढ़ियों की तरह होती है और भाग्य लिफ्ट की तरह....लिफ्ट तो किसी भी समय बंद हो सकती है पर सीढ़िया हमेशा ऊंचाई की ओर ही ले जाती हैं!

स्टूडियो न्यूज

तिमाही फोटो प्रतियोगिता

फोटोग्राफी में अपना नाम और पहचान बनाने के साथ-साथ उपहार पाने और स्टूडियो न्यूज में प्रकाशित होने का मौका। उठाइये अपना कैमरा, रचनात्मक तस्वीरें खींचे और हमें भेजें।

नियम :
1. फोटो केवल डिजिटल रूप में भेजनी है। फाईल का फार्मेट JPEG होना चाहिए।
2. फोटो कलर या B/W कोई भी हो सकती है।
3. फोटो का साइज 8x10 इंच में एवं 300 dpi की होनी चाहिए।
4. फोटो के ऊपर कोई वाटर मार्क या नाम नहीं लिखा होना चाहिए।
5. कम्पटीशन में अधिकतम 2 फोटो ही भेज सकते हैं।
6. प्रतिभागी अपनी फोटो के लिए स्वयं जिम्मेदार होगा। किसी दूसरे की फोटो होने पर स्टूडियो न्यूज जिम्मेदार नहीं होगा।
7. फोटोग्राफर अपनी पासपोर्ट साइज फोटो, पूरा पता एवं फोन नम्बर अवश्य भेजें अन्यथा उनकी फोटो प्रतियोगिता में शामिल नहीं की जायेगी।

प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि
28 जुलाई 2019

निर्णायक दल

वरिष्ठ छायाकार
अनिल रिसाल सिंह

आर्ट्स कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल
जयकृष्ण अग्रवाल

फोटो infostudionewsup@gmail.com पर मेल करें।

हर तिमाही जीतिए

32GB पेन ड्राइव

16GB पेन ड्राइव

लेह : फोटोग्राफी का स्वर्ग

ध्यान चंद
ट्रैवलोग्राफर

गौतम बरूआ

लखनऊ (उ.प्र.) से गौतम बरूआ एवं ध्यान चंद द्वारा अप्रैल माह में की गई लेह यात्रा वृतांत।

लद्दाख का परिचय : लगभग हजार वर्ष पहले लद्दाख व पड़ोसी तिब्बत समुद्र था। कालान्तर में 100 किमी. की पेंगगोंग झील बची है जो 32 किमी. भारत में है तथा शेष चीन (तिब्बत) में है।

लद्दाख जाने के केवल 3 तरीके हैं -

1. मनाली, रोहतांग, तागलांग्ला पास से
2. श्रीनगर, जोजीला, कारगिल से
3. हवाई मार्ग जम्मू से, श्रीनगर से, प्रमुखतः नई दिल्ली (अधिकतम प्रचलित और सभी मौसम योग्य)

शेष मार्ग 6 महीने बंद रहते हैं तथा मई से सितम्बर तक खुलते हैं।

क्या देखें -

लेह में : लेह पैलेस, स्पुतिक गोम्पा, मैगनेटिक हिल, शांति स्तूप, हाल ऑफ फेम, जोरावर सिंह फोर्ट, थिकसे मॉनेस्टरी, शे-पैलेस। (2019 के टैक्सी रेट 5500 से 8000)

नुब्रा वैली (हुण्डर रेगिस्तान) : (विशेष : सर्वप्रथम लेह के बाहर कहीं भी जाना है तो ILP (इनर लाइन परमिट) प्रति व्यक्ति रू. 480.00 + रू. 20 प्रतिदिन की दर से अपनी आवश्यकता अनुसार बनवायें। नुब्रा वैली का लेह से इनोवा का किराया 10700 है तथा दूरी 125 किमी. है।)

नयनाभिराम दृश्य लगातार आपके साथ चलेंगे। रास्ते में विश्व की सर्वाधिक ऊँचाई वाले खारदूंगला पास से गुजरेंगे। कुछ वक्त अवश्य बितायें। नुब्रा वैली के पहले डिस्किट मॉनेस्ट्री का भी दर्शन करें। अंत में टेंट में रात्रि विश्राम अवश्य करें। पास में ऊट की सवारी का आनन्द भी उठायें।

पैंगगोंग झील : चांगला पास पार करके विश्व की सर्वाधिक लम्बी झील को घंटो निहार सकते हैं। रात्रि विश्राम अवश्य करें। रात में आकाश गंगा की पानी में छटा आपको आत्मुग्ध कर देगी।

सावधानियाँ :

पहले दिन कहीं न जायें न तेज चलें। सन स्क्रीन क्रीम अवश्य रखें। -20 डिग्री तक असरदार जैकेट अवश्य रखें। जरूरी दवाओं को अवश्य रखें।

STUDIO NEWS
लखनऊ, सोमवार, 6 मई 2019 से 5 जून 2019

एक बेहतर फोटोग्राफ इतिहास का दरवाजा तो खोलता ही है साथ ही भविष्य को देखने का मौका भी देता है - शैलीमैन

एएलईडी, ड्यूल एलईडी या ज़ेनॉन फ़्लैश

स्मार्टफोन फोटोग्राफी के लिए कौन सी टेक्नोलॉजी है ज्यादा बेहतर?

स्मार्टफोन फोटोग्राफी को पॉपुलर बनाने के लिए काम कर रहे वरिष्ठ छायाकार **अतुल हुंडू** बता रहे हैं कि कम रोशनी में किस तरह फ्लैश से बेहतर परिणाम लिए जा सकते हैं।

इस बात की प्रबल सम्भावना है कि कम रोशनी में फ़ोन से फोटो लेते समय आप फ़ोन के फ्लैश का उपयोग करते होंगे। आइए जाने कि फ़ोन में प्रयोग होने वाले अलग-अलग फ्लैश सिस्टम के बीच क्या अंतर हैं और स्मार्टफोन फोटोग्राफी के लिए कौन सी तकनीक बेहतर है?

एलईडी फ्लैश :

एलईडी फ्लैश सिस्टम अंधेरे दृश्य को रोशन करने का सबसे सामान्य तरीका है। एलईडी फ्लैश छोटी और सस्ती होती है और इसमें बिजली की खपत भी कम होती है। यह बात उन्हें स्मार्टफ़ोन के लिए आदर्श बनाती है। लेकिन अन्य फ्लैश तकनीक की तुलना में एलईडी की रोशनी काफी कम होती है। इसका मतलब कि यह फ्लैश केवल एक छोटे से क्षेत्र को कवर कर सकती हैं। इनकी रोशनी का रंग कई बार थोड़ा नीलापन लिए हुए हो सकता है। जिसकी वजह से तस्वीर में कलर कास्ट भी आ सकती है। उन्हें टॉर्च की तरह भी लगातार चलाया जा सकता है, लेकिन एलईडी फ्लैश से तस्वीर लेते समय सब्जेक्ट का हल्का सा मूवमेंट होने पर तस्वीर हिली हुई आती है।

ज़ेनॉन फ्लैश :

प्रोफेशनलस द्वारा प्रयोग की जाने वाली फ्लैश यूनिट्स ज़ेनॉन आधारित होती है। एलईडी की तुलना में ज़ेनॉन ट्यूब वाले फ्लैश अधिक शक्तिशाली होते हैं। यह एक बड़ी जगह को रोशन करने में सक्षम है। यह सुपर-क्विक होते है, इसलिए इससे मोशन कैप्चर करना आसान है। स्मार्टफोन के लिए इसके बहुत लोकप्रिय नहीं होने का कारण ज्यादातर इसका साइज और अतिरिक्त हार्डवेयर से संबंधित है। ज़ेनॉन गैस की उस ट्यूब को फोन में लगाने के लिए अतिरिक्त जगह की आवश्यकता होती है और इससे चलने में अतिरिक्त बैटरी की खपत होती है।

ड्यूल एलईडी फ्लैश :

ड्यूल एलईडी फ्लैश में एलईडी की टोन की समस्या को दूर करने के लिए दो अलग-अलग रंगों के एलईडी का उपयोग होता हैं, एक "वार्म" और एक "कूल"। फोन सॉफ्टवेयर बड़ी चतुराई से एम्बिएंस लाइट के हिसाब से दोनो एलइडी की रोशनी को मिला कर फोटो में नेचुरल टोन देता है। ऑन कैमरा ड्यूल एलईडी फ्लैश, फ़ोन फोटोग्राफी में बेस्ट रिजल्ट देते है।

स्मार्टफोन कैमरे की फ़्लैश के रिजल्ट ज़्यादातर अच्छे नहीं आते। कंपनियों ने अपने ऑन-कैमरा फ़्लैश को सुधारने की कितनी भी कोशिश की हो लेकिन इसके नतीजे ज़्यादातर अस्पष्ट, विषम-रंग के और अक्सर थोड़े धुंधले होते हैं। स्मार्टफोन फ्लैश के नतीजे इतना खराब क्यों हैं? इसका कारण है कि वे वास्तव में फ्लैश नहीं करते।

स्मार्टफ़ोन फ्लैश में एलईडी बल्ब का उपयोग होता है। एलइडी छोटी, सस्ती व एनर्जी एफिसिएंट होती है। यह छोटी फ्लैश यूनिट आसानी से मोबाइल डिवाइस के छोटे से स्थान में फिट हो जाती है।

वास्तविक फ्लैश यूनिट में फ्लैश करने के लिए ज़ेनॉन गैस से भरी एयरटाइट ट्यूब का उपयोग होता हैं। यह एक अत्यंत जटिल प्रक्रिया है, इसके लिए एक उच्च-वोल्टेज कैपैसिटर की आवश्यकता होती है। पारंपरिक फ्लैश ट्यूब से आने वाला प्रकाश आमतौर पर केवल एक सेकंड के बहुत छोटे हिस्से तक रहता है। उदाहरण के लिए, एलिनक्रोम जैसी हाई-एंड स्टूडियो लाइट में 1 सेकंड के 1/5000 वें हिस्से के बराबर फ्लैश ड्यूरेशन हैं। यहां तक कि एक कॉम्पैक्ट कैमरे की फ्लैश भी 1सेकंड के 1000 हिस्से से कम समय के लिए चमकती है। फ्लैश के उन सुपर-शॉर्ट बर्स्ट्स किसी भी मोमेंट को फ्रीज करने में समर्थ हैं।

जब आप फ़ोन से तस्वीर लेते समय फ्लैश का प्रयोग करते है तब आपके स्मार्टफ़ोन की एलईडी लाइट एक लंबे अंतराल पर चालू और बंद होती है। उस समय अगर सब्जेक्ट हिल जाए तो उसकी तस्वीर ब्लर आती है। इसी वजह से एलइडी फ्लैश के रिजल्ट अच्छे नहीं आते।

ज़्यादातर फ़ोन कैमरे तस्वीरें लेते समय फोटो में डिटेल्स बढ़ाने के लिए मल्टीप्ल शॉट्स को जोड़ कर एक डिटेल्ड फोटो बनाते है। आईफोन और गूगल पिक्सेल जैसे फ़ोन एक बढ़िया डायनामिक रेंज वाली बढ़िया तस्वीर लेने के लिए हर क्लिक पर मल्टीप्ल शॉट्स (10 शॉट्स तक) लेते है और फिर उस डेटा को जोड़कर एक बढ़िया फोटो तैयार करते हैं। इस वजह से एलइडी फ्लैश से मूविंग सब्जेक्ट की फोटो हिली हुई आती है।

ज़ेनॉन फ्लैश एलइडी फ्लैश की तुलना में पावरफुल तो होती है लेकिन बहुत ज़्यादा बैटरी की खपत के अलावा अतिरिक्त गर्मी भी पैदा करती है। इसलिए फोन फोटोग्राफी के लिए एक अच्छा समाधान नहीं है।

इस दिशा में आईफ़ोन जैसी कंपनी ने काफी काम किया है। उनकी टेक्नोलॉजी दूसरों से बेहतर है। ऐप्पल की ट्रू-टोन तकनीक में कूल और वार्म टोन की दो एलइडी लाइट को मिला कर वातावरण की एम्बिएंट लाइट से मैच कराया जाता है। लेकिन अब भी इस तकनीक में बहुत काम होना बाकी है।

फ़ोन कैमरा में फ़्लैश द्वारा ली गई तस्वीरों की क्वालिटी ख़राब होने का मुख्य कारण कम पावर की एलइडी का प्रयोग है। एक छोटी से जेनॉन फ्लैश, एलइडी फ्लैश की तुलना में कही बेहतर है। यह फ्लैश एम्बिएंस लाइट के प्रयोग के बगैर सब्जेक्ट को पूरी तरह से रोशन करने में समर्थ हो सकती है। जेनॉन फ्लैश की रौशनी फोटोग्राफी की भाषा में पूर्ण रूप से सफ़ेद मानी जाती है इसी वजह से सब्जेक्ट का रंग भी एक्चुअल आता है।

एलइडी फ्लैश के बगैर कम रोशनी में फोटो लेने एक्सटर्नल लाइट सोर्स एक अच्छा विकल्प है।

इन सभी लिमिटेशंस का जवाब है एक्सटर्नल लाइट सोर्स। कुछ फ़ोन फोटोग्राफर लाइटिंग एक्सेसरीज जैसे छोटे, कलर-करेक्टेड एलईडी लाइट पैनल या सर्कुलर रिंग-लाइट्स को वैकल्पिक रूप से चुनते है। इनकी रोशनी इंटरनल यह पैनल इंटरनल एलइडी फ्लैश से ज़्यादा होती है और सब्जेक्ट को बिहार तरीके से और सामान रूप से लाइट करते हैं।

इस दिशा में कुछ कंपनियों ने काम किया है। जैसे एक किकस्टार्टर कंपनी ने 'लिट' नाम का वायरलेस ज़ेनॉन फ्लैश डेवलप किया है। गोडोक्स जैसा ब्रांड भी फ़ोन फोटोग्राफी के लिए ऑफ कैमरा वायरलेस फ़्लैश 'गोडॉक्स ए-1' लेकर आया है।

हर बार जब आप शटर बटन को दबाते हैं तो फ्लैश सब्जेक्ट पर आप के चुने हुए एंगल से पर्याप्त रौशनी डालती है। लेकिन इसके लिए आपको ठीक-ठाक रकम खर्च करनी पड़ेगी। 'लिट' वायरलेस फ्लैश सिस्टम वायरलेस कनेक्शन के बजाय ब्लूटूथ का उपयोग करता है। फ्लैश को कैमरा से कनेक्ट करने के लिए एक कैमरा ऐप की आवश्यकता होती है। ऐप की सहायता से एक समय में चार तक फ्लैश यूनिट को सिंक कर एक साथ प्रयोग किया जा सकता है।

गोडोक्स ए-1 वायरलेस तकनीक पर काम करता है। एक बार चार्ज करने के बाद आप गोडोक्स की ऐप की मदद से आप इसे अपने फ़ोन से कनेक्ट कर सकते है। सिंगल चार्जिंग में इससे 700 तस्वीरें लेना संभव है। फ़ोन फोटोग्राफी के लिए इसका प्रयोग प्रोफेशनल फ्लैश सिस्टम को कण्ट्रोल करने वाले ट्रिगर के तौर पर भी किया जा सकता है।

बाज़ार में ट्रिपल एलइडी फ्लैश, एलइडी + ज़ेनॉन फ्लैश वाले फ़ोन कैमरा भी लांच हो चुके है। यह संभव है कि हम भविष्य में फ़ोन कैमरा फ्लैश टेक्नोलॉजी और उन्नत हो जाए लेकिन आजकल के स्मार्टफोन कैमरे के फ्लैश को अधिकांश स्थितियों में बंद रखना बेहतर है। मल्टी-शॉट एचडीआर व नाईट मोड फ़ंक्शन से लैस वर्तमान पीढ़ी के स्मार्टफ़ोन, जैसे गूगल पिक्सेल-3, हुआवेई P -30 प्रो, सैमसंग S-10, आईफोन XS कम रौशनी में भी बहुत बेहतर रिजल्ट देने में सक्षम है। इसीलिए जहाँ तक संभव हो ऑन फ़ोन कैमरा फ्लैश का प्रयोग न करें।

द्वितीय तिमाही फोटो प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ और सराहनीय

सर्वश्रेष्ठ

32GB पेन ड्राइव

मुकुल मुखर्जी
बोकारो स्टील सिटी (झारखण्ड)

सांत्वना (प्रथम)

प्रणव दास
दार्जलिंग (वेस्ट बंगाल)

सांत्वना (द्वितीय)

संजय दास
धनबाद (झारखण्ड)

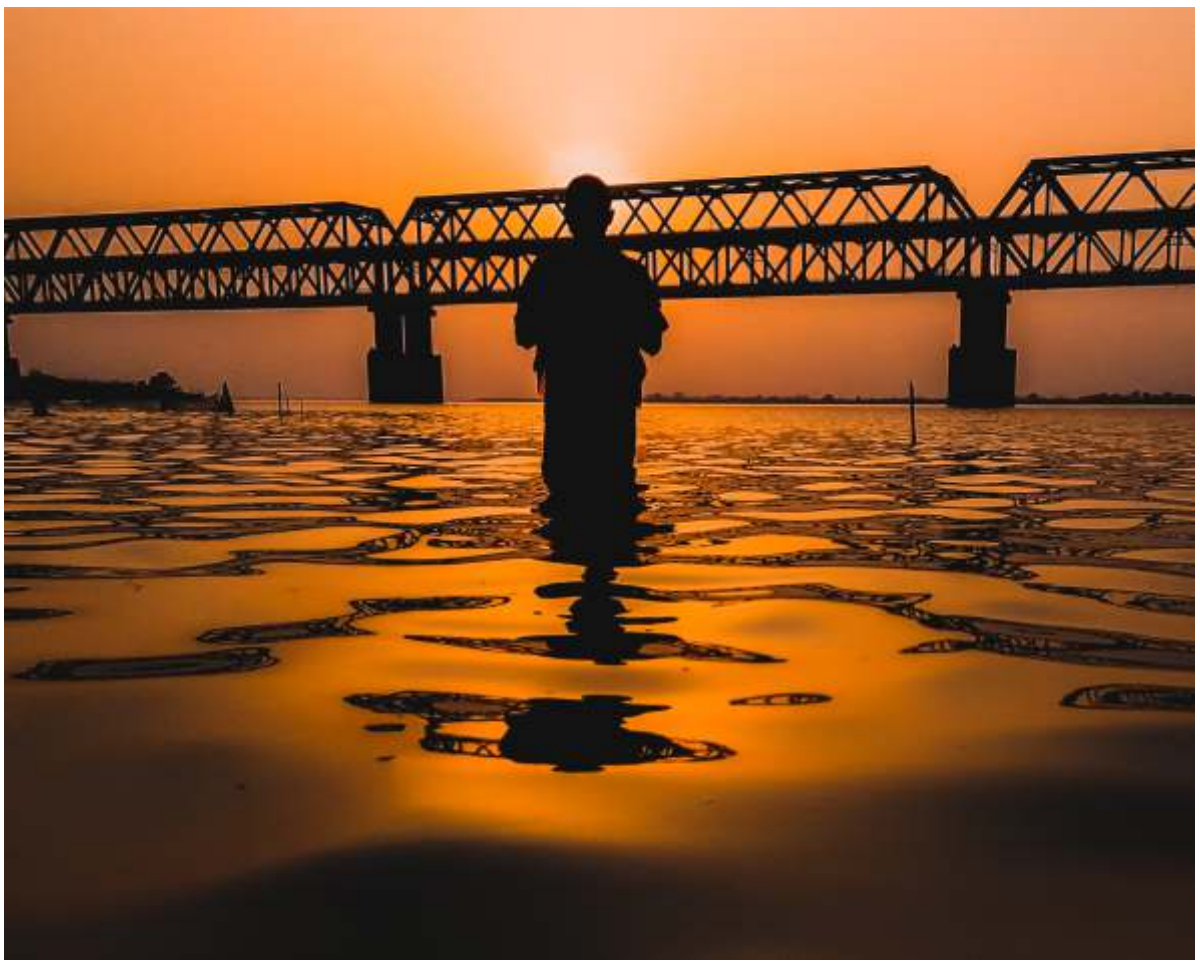

सराहनीय

16GB पेन ड्राइव

राजा रवि
पटना (बिहार)

सांत्वना (तृतीय)

हर्ष दुदानी
धनबाद (झारखण्ड)

STUDIO NEWS
लखनऊ, सोमवार, 6 मई 2019 से 5 जून 2019

कैमरा एक उपकरण है जो लोगों को सिखाता है कि कैमरे के बिना कैसे देखा जाए - डोरोथे लांगे

7 DAYS
ENTERTAINMENT

Anytime....all the time.....
An Event Management Company

Contact for LED WALL rental for Weddings & Events

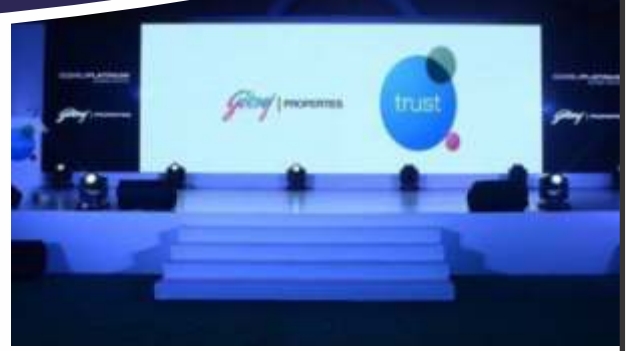

Abhijeet Singh # 9336885050 **Vijay** # 9936500004

P.NO. 10, ASHIYANA ESTATE, CHINHAT, KAMTA, LUCKNOW - 226028
E-mail : info.7daysindia@gmail.com | **www.7daysindia.com**

Z 7 — 45.7 megapixels | 493 AF points^ | 8K time-lapse movie* | 25600 ISO

Body MRP: ₹ 2 30 450 Body + Z 24-70mm f/4 S MRP: ₹ 2 71 450

Z 6 — 24.5 megapixels | 12 FPS# | 4K UHD full-frame movie | 51200 ISO

Body MRP: ₹ 1 56 450 Body + Z 24-70mm f/4 S MRP: ₹ 1 97 950

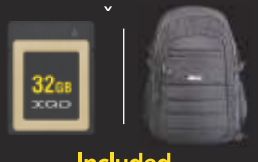

Included

Upto 55% off° on Gimbals with Z7 & Z6

Zhiyun Weebill LAB: ₹ 22 000 (worth ₹ 49 999)
Zhiyun Weebill LAB
with Creator Package: ₹ 30 000 (worth ₹ 65 000)

Nikon

Price quoted is for one unit of product. MRP inclusive of all taxes. | ^In FX format with single-point AF. *8K time-lapse movie production requires third-party software | #When using 12-bit RAW. AE is fixed at the first frame | Premium SMS charges applicable | Accessories shown above are only for reference & not provided with the product | °Discount % in Weebill LAB is 55.99% & Weebill LAB with Creator Package is 53.84%; limited time offer | ˇ32GB XQD card + Card reader with Z6 | 64GB XQD card with Z7

Corporate/Registered Office & Service Centre: **Nikon India Pvt. Ltd.**, Plot No.71, Sector 32, Institutional area, Gurgaon-122001, Haryana, (CIN-U74999HR2007FTC036820). Ph.: 0124 4688500, Fax: 0124 4688527, **Service Ph.:** 0124 4688514, **Service ID:** nindsupport@nikon.com, **Sales and Support ID:** nindsales@nikon.com

TO LOCATE DEALERS IN YOUR AREA ▶ SMS NIKON <PINCODE> to 58888 ▶ CALL TOLL FREE NO.: 1800-102-7346 ▶ VISIT OUR WEBSITE: www.nikon.co.in

RNI No. : UPHIN/2017/74695, **स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक** - सुरेंदर सिंह बिष्ट, शॉप नं. 3, शान्ति मार्केट, लक्ष्मणपुरी गेट, फैजाबाद रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ - 226016 द्वारा ज्ञान प्रिंटर्स, 207, 208 लेखराज मार्केट-2, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016 से प्रकाशित।
सम्पादक - सुरेंदर सिंह बिष्ट, फोन - 0522-4108575, ई-मेलः infostudionewsup@gmail.com, वेबसाइट : www.studionews.co.in